आर. एन. आई. नं. : RAJHIN/2013/59711

पोस्टल रजि. नं. : बीकानेर/146/24-26

पशु पालन नए आयाम

वर्ष : 13 अंक : 8 अप्रैल, 2026 मूल्य : ₹2.00

।पशुधनं नित्यं सर्वलोकोपकारकम्।

मार्गदर्शन : कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास

कुलगुरु सन्देश

वन हेल्थ एवं उभरती चुनौतियां : पशु विज्ञान की नई दिशा

वर्तमान समय में विश्व एक ऐसे दौर से गुजर रहा है, जहाँ मानव, पशु और पर्यावरण के बीच का संबंध पहले से कहीं अधिक स्पष्ट और महत्त्वपूर्ण हो गया है। कोविड–19 जैसी वैश्विक महामारी ने हमें यह सिखाया है कि किसी भी बीमारी को केवल एक दृष्टिकोण से नहीं देखा जा सकता। राजस्थान जैसे राज्यो में जहां पशुपालन ग्रामीण जीवन का अभिन्न हिस्सा है, यह संबंध और भी अधिक गहरा हो जाता है। यहाँ पशु केवल आर्थिक साधन नहीं है, बल्कि परिवार के सदस्य के समान होते हैं और उनका स्वास्थ्य सीधे मानव जीवन और आजीविका को प्रभावित करता है। पिछले कुछ वर्षों में हमने लंपी स्किन डिजिज, ब्रुसेलोसिस, एवियन इन्फ्लुएंजा जैसे अनेक संक्रामक और जूनोटिक रोगों का प्रभाव देखा है। यह रोग न केवल पशुओं की उत्पादकता को प्रभावित करते हैं, बल्कि मानव स्वास्थ्य के लिए भी एक गंभीर खतरा उत्पन्न करते हैं। इसके साथ ही एंटीमाइक्रोबियल रेसिस्टेंस का बढ़ता हुआ खतरा चिकित्सा और पशुचिकित्सा दोनों क्षेत्रों के लिए एक बड़ी चुनौती बनकर उभरा है। जब हम बिना आवश्यकता या गलत तरीके से एंटीबायोटिक्स का उपयोग करते हैं तो बैक्टीरिया उनमें प्रतिरोध विकसित कर लेते हैं, जिससे भविष्य में सामान्य उपचार भी अप्रभावी हो सकते है। ऐसी परिस्थितियों में ''वन हेल्थ'' की अवधारणा अत्यंत प्रासंगिक हो जाती है जो यह बताती है कि मानव स्वास्थ्य, पशु स्वास्थ्य और पर्यावरण समाधान तीनों एक दूसरें से जुड़े हुए हैं और इनका समाधान भी समन्वित प्रयासों से ही संभव है। इसका अर्थ है कि पशुचिकित्सक, चिकित्सक, पर्यावरणविद, वैज्ञानिक और किसान एक साथ मिलकर कार्य करें। हमारा विश्वविद्यालय इस दिशा में प्रशिक्षण अनुसंधान और प्रसार सेवाओं के माध्यम से निरंतर प्रयासरत है ताकि इस एकीकृत दृष्टिकोण को जमीनी स्तर पर लागू किया जा सके। राजस्थान के भौगोलिक और जलवायु परिस्थितियाँ इस विषय को और भी महत्त्वपूर्ण बना देती हैं। बढ़ता तापमान, अनियमित वर्षा और चारे एवं जल संसाधनों की कमी पशुओं के स्वास्थ्य और उत्पादकता को प्रभावित कर रही है। हीट स्ट्रेस के कारण दुग्ध उत्पादन में कमी, प्रजनन संबंधी समस्याएँ और रोगों के प्रति संवेदनशीलता बढ़ाना आम बात हो गई है ऐसे में एक वैज्ञानिक प्रबंधन, संतुलित पोषण और स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप तकनीकों का उपयोग अत्यंत आवश्यक है। साथ ही हमारी देशी नस्लों जो इन कठोर परिस्थितियों में भी बेहतर अनुकूलन क्षमता रखती हैं इस चुनौती का एक महत्त्वपूर्ण समाधान प्रस्तुत करती हैं। अंततः यह समझना आवश्यक है कि भविष्य का पशुपालन न केवल उत्पादन बढाने तक सीमित रहेगा बल्कि यह स्वास्थ्य, पर्यावरण और सामाजिक संतुलन के साथ जुडा हुआ होगा। ''वन हेल्थ'' की अवधारणा हमें इसी संतुलन की दिशा में आगे बढने का मार्ग दिखाती है। यह हम सभी की सामूहिक जिम्मेदारी है कि हम वैज्ञानिक ज्ञान, पारंपरिक अनुभव और आधुनिक तकनीकों का समन्वय करते हुए एक स्वस्थ, सुरक्षित और समृद्ध पशुपालन प्रणाली का निर्माण करें।

डॉ. सुमंत व्यास

किसी देश की महानता का आंकलन इस बात से किया जा सकता है कि लोग पशुओं से कैसा व्यवहार करते हैं।

–महात्मा गांधी

विश्वविद्यालय समाचार

''मरूस्थलीय घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु पशुपालक- महत्व एवं चुनौतिया'' विषय पर कार्यशाला

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा अन्तर्राष्ट्रीय चारागाह एवं घुमन्तु पशुपालक वर्ष – 2026 के तहत "मरूस्थलीय घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु पशुपालक – महत्व एवं चुनौतिया" विषय पर 30 मार्च को एक दिवसीय कार्यशाला का आयोजन हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि अखिल भारतीय घुमन्तु कार्य प्रमुख श्री दुर्गादास जी तथा विशिष्ठ अतिथि प्रबंध मण्डल सदस्य, राजुवास, बीकानेर जगमाल सिंह राईका रहे। मुख्य अतिथि दुर्गादास जी ने अपने उद्बोधन में कहा कि राजस्थान की मरुभूमि और विषम जलवायु के बीच पशुपालन ही कृषकों का एक आर्थिक सहारा है। उन्होंने बताया कि राजस्थान की विषम जलवायु परिस्थितीयों में जहां वर्षा की कमी है, वहाँ पशुपालन ही ग्रामीण अर्थव्यवस्था को समृद्ध करता है। पशुपालन से न केवल दूध बल्कि ऊन, चर्म और मांस उद्योग को भी बढ़ावा मिलता है। उन्होने कहा कि पशुपालन राजस्थान की अर्थव्यवस्था का सबसे मजबूत स्तंभ है। मुख्य अतिथि ने कार्यशाला में पशुपालकों के पास मौजूद "पीढ़ी–दर–पीढ़ी" ज्ञान की सराहना की और कहा कि पशुपालक बिना किसी औपचारिक डिग्री के भी पशुचिकित्सा और वनस्पतियों के औषधीय गुणों के विशेषज्ञ होते हैं। वे चरागाह प्रबंधन और जल स्रोतों की बेहतर समझ रखते हैं, जो उन्हें विषम परिस्थितियों में भी सुरक्षित रखता है। उन्होने एक राज्य से दूसरे राज्य में पशुओं के पलायन के समय आने वाली विभिन्न समस्याओं एवं अड़चनों विषयों पर भी अपने विचार साझा किए। उन्होने कहा कि मंगला पशु बीमा योजना जैसी सरकारी योजनाओं को आसानी से पशुपालकों तक पहुँचाया जाना चाहिए तथा चरागाह को पुनर्जीवित करने के मॉडल को पूरे राजस्थान में लागू करना चाहिए। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु वेटरनरी विश्वविद्यालय, बीकानेर डॉ. सुमंत व्यास ने बताया कि इस कार्यशाला के अन्तर्गत राजस्थान में घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु पशुपालकों की जीवन पद्धति की वर्तमान स्थिति का आकलन करना, पशु जैव विविधता के संरक्षण में घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु पशुपालकों की भूमिका को रेखांकित करना, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु पशुपालक समुदायों की प्रमुख समस्याओं एवं बाधाओं की पहचान करना तथा सतत पशुपालन व्यवस्था के लिए नीतिगत सुझाव एवं सिफारिशें तैयार करना मुख्य उद्देश्य है। उन्होने कृषि उपजों पर न्यूनतम समर्थन मूल्य (एम.एस.पी.) की तरह पशु उत्पादों के लिए भी एम.एस.पी. की अवधारणा सुझाई। उन्होने भेड़ और बकरियों की बिक्री के लिए उनके 'लाइव वैट' (जीवित वजन) के आधार पर निर्धारित मूल्य तय करने की प्रणाली पर भी विचार प्रकट किये। कार्यक्रम के दौरान विशिष्ट अतिथि प्रबंध मण्डल, सदस्य, राजुवास, बीकानेर जगमाल सिंह राईका ने अपने सम्बोधन में उन्होने कहा कि कार्यशाला का मुख्य उद्देश्य पशुपालन के क्षेत्र में नए नवाचारों को अपनाना और समाज के सहयोग से इस विरासत को बचाना है। उन्होने वर्तमान समय में पशुपालन से युवाओं के कम होते रूझान पर चिंता व्यक्त करते हुए कहा कि भविष्य में "सड़क किनारे प्याऊ और ये पगड़ी वाले ताऊ, खेजड़ी का ठूंठ और मरुस्थल में ऊंट ढूंढते रह जाओगे" पक्ति चरितार्थ हो जाएगी। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने स्वागत भाषण दिया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने तकनीकी सत्र की जानकारी प्रदान करते हुए बताया कि कार्यशाला के दौरान छोटे एवं बड़े जुगाली करने वाले पशुओं पर मंथन हेतु दो अलग–अलग तकनीकी सत्रों का आयोजन किया गया, जिसमें घुमन्तु एवं अर्द्ध घुमन्तु पशुपालकों की समस्याओं को तकनीकी विशेषज्ञों द्वारा सुना गया एवं उनके निस्तारण हेतु चर्चा की गई। छोटे पशुओं के तकनीकी सत्र में उरमूल सीमांत समिति, बज्जू सुशीला ओझा, ऊन उद्योगपति, बीकानेर कमल कल्ला, सी.ई.ओ., समाख्या सस्टेनेबल अल्टरनेटिव्स, बज्जू प्रेरणा अग्रवाल और वरिष्ठ वैज्ञानिक एवं प्रमुख, के.वी.के., जैसलमेर डॉ. दीपक चतुर्वेदी तथा प्रमुख वैज्ञानिक, सी.एस.डब्लू.आर.आई. डॉ. आशीष चौपड़ा पैनेलिस्ट रहे। बड़े पशुओं के तकनीकी सत्र में प्रबंध मण्डल, सदस्य, जगमाल सिंह राईका, सी.ई.ओ., बहुला नेचुरल प्रो. लि. आकृति श्रीवास्तव, पूर्व अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. जे.एस. मेहता पैनलिस्ट रहे तथा इस सत्र की अध्यक्षता पूर्व निदेशक क्लिनिक, राजुवास, बीकानेर प्रो. टी.के. गहलोत द्वारा की गई वही प्रमुख वैज्ञानिक एन.आर.सी.सी. डॉ. वेद प्रकाश सह–अध्यक्ष रहे। कार्यक्रम में विश्वविद्यालय के संकाय सदस्य, कर्मचारीगण, विद्यार्थी, बीकानेर गणमान्य, घुमन्तु एवं अर्द्धघुमन्तु पशुपालक उपस्थित रहे।

भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनुसूचित जाति उपयोजना अन्तर्गत प्रशिक्षण

बकरी पालन में व्यावसायिक अवसर प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनुसूचित जाति उपयोजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति वर्ग के 30 विद्यार्थियों हेतु "बकरी पालन में व्यावसायिक अवसर" विषय पर तीन दिवसीय प्रशिक्षण 5–7 मार्च को आयोजित हुआ। उद्घाटन सत्र को सम्बोधित करते हुए कार्यक्रम के मुख्य अतिथि वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि वेटरनरी के क्षेत्र में रोजगार की अपार संभावनाएं है विद्यार्थियों में डिग्री पाठ्यक्रम के साथ–साथ एन्टरप्रेन्योरशिप (व्यवसायिक) प्रशिक्षणों के माध्यम से उद्यमशिलता का विकास कर सकते है। इन प्रशिक्षणो से कौशल विकास करके विद्यार्थी भविष्य में सफल उद्यमी बन सकते है। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने विद्यार्थियों को जॉब सीकर की बजाय जॉब प्रोवाइडर बनने हेतु प्रेरित किया। डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि इन प्रशिक्षणो का उद्देश्य विद्यार्थियों में उद्यमिता का विकास करना है। ताकि भविष्य में रोजगार के विभिन्न अवसरों को समुचित उपयोग हो सके। अधिष्ठाता, वेटरनरी महाविद्यालय प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने विद्यार्थियों को सम्बोधित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस प्रशिक्षण में अनुसूचित जाति वर्ग के 30 विद्यार्थी हिस्सा ले रहे है जो कि विद्यार्थियों के उद्यमशीलता के विकास में सहायक होंगे। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. संजय सिंह रहे। डॉ. पारमेष्ट विष्णु कुमार शर्मा ने विद्यार्थियो के दल का निर्देशन किया।

मुर्गी पालन उद्यमिता प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनुसूचित उपयोजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति वर्ग के 30 विद्यार्थियों हेतु तीन दिवसीय मुर्गी पालन उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम 23–25 मार्च को आयोजित किया गया। समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि मुर्गीपालन ऐसा व्यवसाय है जिसको अतिलघुस्तर से इण्डस्ट्री स्तर तक अपनाया जा सकता है। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने प्रशिक्षणार्थियों को अर्जित ज्ञान का मुर्गी पालन में वैज्ञानिक तरीके से उपयोग कर सफल उद्यमिता हेतु प्रेरित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस प्रशिक्षण में अनुसूचित जाति वर्ग के 30 विद्यार्थी ने हिस्सा लिया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. संजय सिंह उपस्थित रहे।

डेयरी फार्मिंग प्रबंधन और उद्यमिता प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के प्रसार शिक्षा निदेशालय द्वारा भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद्, नई दिल्ली की अनुसूचित उपयोजना के अन्तर्गत अनुसूचित जाति वर्ग के 30 विद्यार्थियों हेतु दिनांक 27–29 मार्च तक तीन दिवसीय डेयरी फार्मिंग प्रबंधन और उद्यमिता प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किया गया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर के अधिष्ठाता प्रो. बी.एन. श्रृंगी ने विद्यार्थियों को डेयरी उद्यमी बनने हेतु प्रेरित किया। प्रो. श्रृंगी ने प्रशिक्षण के दौरान पशुपालन की वैज्ञानिक विधियों को सीखने और अपनाने हेतु भी प्रेरित किया। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस प्रशिक्षण में अनुसूचित जाति वर्ग के 30 विद्यार्थी ने हिस्सा लिया। उन्होने बताया की तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम के दौरान प्रशिक्षार्थियों को डेयरी फार्मिंग प्रबंधन, उन्नत पोषण, स्वास्थ्य प्रबंधन,, दुग्ध उत्पादों के मूल्य संवर्धन आदि विषयों पर व्याख्यान दिये गये एवं गौशाला एवं पशु अनुसंधान केन्द्रों का भ्रमण करवाया गया। डॉ. संजय सिंह प्रशिक्षण कार्यक्रम के समन्वयक रहे।

बजट उपरांत कृषि और ग्रामीण परिवर्तन पर आयोजित वेबिनार में प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के अभिभाषण को देखा और सुना

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर में माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी द्वारा बजट के बाद कृषि और ग्रामीण परिवर्तन पर दिनांक 6 मार्च को आयोजित वेबिनार में वेटरनरी विश्वविद्यालय के अधिकारी, कर्मचारी एवं विद्यार्थी ऑनलाइन मोड से प्रतिभागी रहे। वेटरनरी विश्वविद्यालय के कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने इस वेबिनार को विश्वविद्यालय के संघटक महाविद्यालयों और अन्य इकाईयों द्वारा लाईव प्रसारण को विद्यार्थियों एवं शिक्षकों हेतु सुनने एवं देखने हेतु निर्देशित किया। प्रसार शिक्षा निदेशक प्रो राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस लाईव प्रसारण में विश्वविद्यालय के कुल 421 लोगो ने देखा और सुना जिनमें 330 पुरूष एवं 91 महिलाएं शामिल है। माननीय प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने कहा कि केन्द्र सरकार ने कृषि हेतु बजट जारी किया है जिसका पूरा–पूरा लाभ किसानों एवं इस क्षेत्र से जुड़े लोगो को मिलना चाहिए। माननीय प्रधानमंत्री ने कृषि एवं पशुपालन की विभिन्न योजनाओं की चर्चा करते हुए किसानो का ग्लोबल मार्केट से जुडने, खाद्य वस्तुओं के मूल्य संवर्धन, उन्नत तकनीको के हस्तांतरण, एकल स्वास्थ्य मिशन, किसान क्रेडिट कार्ड, योजना फसल बीमा योजना एवं देश की खाद्यान्न एवं पशु उत्पादकता की स्थिति की जानकारी दी एवं देश में कृषकों की आर्थिक स्थिति उत्थान हेतु विभिन्न विषयों पर चर्चा का संदेश दिया।

गौशाला प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के निदेशालय प्रसार शिक्षा एवं निदेशालय गोपालन, राजस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंजीकृत गौशालाओं के प्रबंधकों, प्रतिनिधियों एवं उन्नत डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम 9–11 मार्च को आयोजित हुआ। उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने गौसंरक्षण एवं गौसंवर्धन में गौशालाओं की भूमिका पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि आज के समय में गौशालाओं को केवल 'पशु शरण स्थल' के रूप में नहीं, बल्कि 'नस्ल सुधार और अनुसंधान केंद्रों' के रूप में विकसित होना चाहिए तथा गौशाला प्रबंधकों को इस कार्य को प्राथमिकता प्रदान करनी चाहिए। उन्होंने बताया कि गौशालाओं को उन्नत वैज्ञानिक प्रबंधन, कृत्रिम गर्भाधान, रिकॉर्ड संधारण द्वारा स्वावलम्बी बनाया जा सकता है। संयुक्त निदेशक पशुपालन विभाग, बीकानेर डॉ. बिरमाराम ने प्रशिक्षणार्थियों को राज्य सरकार द्वारा प्रदत सुविधाओं का लाभ उठाते हुए उचित पशु प्रबंधन करने हेतु प्रेरित किया। समापन सत्र के मुख्य अतिथि निदेशक, राष्ट्रीय उष्ट्र अनुसंधान केन्द्र, बीकानेर डॉ. अनिल कुमार पूनिया ने गौशाला संचालको को सम्बोधित करते हुए कहा कि गौसेवा बहुत ही पुण्य कार्य है ।गौशालाओं को उन्नत खाद्यान, स्वास्थ्य एवं प्रबन्धन से स्वावलम्बन स्तर पर चलाया जा सकता है। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने बताया कि इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण में बीकानेर, चूरू, श्रीगंगानगर व सीकर जिलों के गौशाला संचालक एवं प्रबंधको ने भाग लिया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. संजय सिंह उपस्थित रहे।

वन्य जीवों के बचाव की तकनीक पर कार्यशाला

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के वन्य जीव अध्ययन एवं प्रबंधन केन्द्र द्वारा "वन्य जीवों के बचाव और विवाद निवारण" विषय पर तीन दिवसीय कार्यशाला 5–7 मार्च को आयोजित की गई। कार्यशाला के उद्घाटन सत्र को संबोधित करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा की वर्तमान समय में शहरों और आसपास के क्षेत्रों में मानव–वन्यजीव संघर्ष की घटनाएँ बढ़ती जा रही हैं। उन्होंने वन्यजीव संरक्षण अधिनियम–1972 की हाल ही में संशोधित अनुसूचियों के बारे में जानकारी देते हुए बताया कि इसमें कई नए वन्यजीवों को शामिल किया गया है, जिससे उनके संरक्षण को नई दिशा मिलेगी। कुलगुरु डॉ. सुमन्त व्यास ने कहा पशु चिकित्सकों को प्रशिक्षण के माध्यम से अर्जित कौशल वन्यजीवों के रेस्क्यू, इलाज एवं संरक्षण हेतु लाभप्रद होगा। अधिष्ठाता वेटरनरी महाविद्यालय, बीकानेर प्रो. बी.एन. श्रृंगी व निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने भी सम्बोधित किया। समापन अवसर पर डॉ. अनिल कुमार, डॉ. अरविन्द माथुर, उपनिदेशक नाहरगढ़ बायोलॉजिकल पार्क, जयपुर, डॉ. निधि राजपूत ने वन्यजीव फॉरसिंक विज्ञान तथा वन्यजीव अपराधों से सबंधित कानूनी पहलुओं पर व्याख्यान दिया। केन्द्र के मुख्य अन्वेषक डॉ. जे.पी. कच्छावा एवं सह–अन्वेषक डॉ. एल.एन. सांखला ने यह कार्यक्रम आयोजित किया।

प्रधानमंत्री किसान सम्मान निधि योजना के लाइव प्रसारण में पशुपालकों की भागीदारी

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर संघठक महाविद्यालयों, कृषि विज्ञान केन्द्र एवं विभिन्न पशु विज्ञान केन्द्रों में माननीय प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी जी की "पी.एम. किसान सम्मान निधि योजना" का लाइव प्रसारण 13 मार्च को किया गया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास के निर्देशन में आयोजित इस ऑनलाइन कार्यक्रम को विश्वविद्यालय के अधिकारीगण, संकाय सदस्य, विद्यार्थियों, किसानों एवं पशुपालकों ने देखा और सुना। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा किसान सम्मान निधि योजना की 22वीं किस्त के तहत 9 करोड़ 32 लाख से अधिक किसानों को 18,640 करोड़ रूपये की सम्मान राशि का हस्तांतरण कर लाभान्वित किया गया। माननीय प्रधानमंत्री द्वारा असम के गुवाहाटी से इस कार्यक्रम का लाइव प्रसारण किया गया। पशुचिकित्सा एवं पशु विज्ञान महाविद्यालय, बीकानेर के लाइव प्रसारण कार्यक्रम में अधिष्ठाता प्रो. बी.एन. श्रृंगी, निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया, परीक्षा नियंत्रक डॉ. सुनीता पारीक, प्रभारी निदेशक कार्य (भू संपदा) डॉ. नरेन्द्र सिंह राठौड़, संकाय सदस्य एवं विद्यार्थी उपस्थित रहे।

गौशाला प्रबंधकों एवं डेयरी संचालकों का प्रशिक्षण

राजस्थान पशुचिकित्सा और पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर के निदेशालय प्रसार शिक्षा एवं निदेशालय गोपालन, राजस्थान, जयपुर के संयुक्त तत्वावधान में पंजीकृत गौशालाओं के प्रबंधकों, प्रतिनिधियों एवं उन्नत डेयरी संचालकों का तीन दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम दिनांक 16–18 मार्च को आयोजित किया गया। समापन सत्र की अध्यक्षता करते हुए कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि गौशालाओं को स्वावलम्बी बनाने हेतु केंचुआ खाद एवं बायोगैस जैसी तकनीकों को गौशालाओं में स्थापित करने का सुझाव दिए, ताकि गौशाला संचालन कम लागत में हो सके तथा जैविक उत्पादन से वातावरण भी स्वच्छ रहे। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कृत्रिम गर्भाधान, उन्नत गौ प्रबंधन एवं गौशालाओं में रिकार्ड संधारण को अपनाने का भी सुझाव दिया। कुलगुरु डॉ. सुमंत व्यास ने कहा कि इस प्रकार के प्रशिक्षणों से गौशालाओं का आपस में समन्वय स्थापित होता है जो कि नवाचारो को समझने में सहायक है। कार्यक्रम के अतिथि राजस्थान गौ–ग्राम सेवा संघ के अध्यक्ष सूरजमाल सिंह नीमराणा ने कहा कि प्रशिक्षण के दौरान अर्जित कौशल एवं गौशाला प्रबंधन की वैज्ञानिक विधियों को गौशालाओं में लागू किया जाना चाहिए। निदेशक प्रसार शिक्षा प्रो. राजेश कुमार धूड़िया ने विश्वविद्यालय के प्रसार कार्यक्रमों का विवरण देते हुए बताया कि इस तीन दिवसीय प्रशिक्षण में बीकानेर, हनुमानगढ़, श्रीगंगानगर व सीकर जिलों के 35 गौशाला संचालक एवं प्रबंधको ने भाग लिया। प्रशिक्षण समन्वयक डॉ. संजय सिंह रहे।

पशुपालक प्रशिक्षण समाचार

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ

पशु विज्ञान केन्द्र, सूरतगढ द्वारा दिनांक 25 एवं 27 मार्च को गांव फरीदसर एवं पालीवाला गांवो में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 73 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, जोधपुर द्वारा दिनांक 12 मार्च को गांव केरू तथा 13 मार्च को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 48 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर

पशु विज्ञान केन्द्र, जालौर द्वारा दिनांक 17 मार्च को गांव भूतवास में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया। इस शिविर में 31 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर

पशु विज्ञान केन्द्र, डूंगरपुर द्वारा दिनांक 11 एवं 19 मार्च को गांव करमेला माथुगांवडा एवं पालफूर गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 52 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही

पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही द्वारा दिनांक 13 एवं 19 मार्च को गांव राजपुरा एवं पालड़ी आर में एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन शिविरों में 52 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ़

पशु विज्ञान केन्द्र, रतनगढ द्वारा दिनांक 5, 9, 16, 23, 25 एवं 27 मार्च को गांव आसपालसर मुगलेरा, बुकनसर बड़ा, भोजसरासर, हालासर, मालसर एवं खेजड़ा दिखनादा गांवों में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 123 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा

पशु विज्ञान केन्द्र, बोजुंदा द्वारा दिनांक 5 मार्च को सांद गांव में एवं दिनांक 11, 13 एवं 18 मार्च को केन्द्र परिसर में आयोजित एक दिवसीय पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों में 130 पशुपालकों एवं कृषकों ने भाग लिया।

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर (हनुमानगढ़)

कृषि विज्ञान केन्द्र, नोहर जिला हनुमानगढ़ द्वारा 7 एवं 12 मार्च को गांव 34 आरडब्ल्यूडी एवं रामसरा गांवो में तथा 6–12 मार्च को केन्द्र परिसर में कृषक एवं पशुपालक प्रशिक्षण शिविरों का आयोजन किया गया। इन प्रशिक्षण शिविरों में 82 किसानों एवं पशुपालकों ने भाग लिया।

सफलता की कहानी

पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर आर्थिक स्थिति को किया सुदृढ़

श्री पदम सिंह देवड़ा जिला सिरोही के गांव अंगोर के प्रगतिशील एवं जागरूक पशुपालक ने कृषि एवं पशुपालन का उचित सामंजस्य बनाकर पशुपालन को व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी सामाजिक व आर्थिक स्थिति को सुद्रढ़ बना चुके है। वर्तमान में इनके पास 80 बीघा सिंचित खेती की भूमि है। 18 वर्ष पूर्व इन्होनें 9 भैंसों एवं 04 गायो से पशुपालन का कार्य शुरू किया था तथा उस समय इनकी आर्थिक स्थिति ठीक नहीं थी और पैंसों की बहुत तंगी थी तब धीरे–धीरे पशुपालन को अपना व्यवसाय के रूप में अपनाकर अपनी परिवार की स्थिति को सुधारा। वर्तमान में इनके पास कुल 40 भैंसें और 12 गायें है जिससे ये लगभग 450 लीटर दूध प्रतिदिन उत्पादित करते है। पदम सिंह दूध के अलावा दूध उत्पादन जैसे पनीर, घी आदि का उत्पादन कर विक्रय करते है। पदम सिंह निंरतर पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही के संपर्क में रहते हुए क्रमिनाशक दवाईयों का उचित उपयोग, संतुलन पशु आहार, पशुओं का वैज्ञानिक प्रबंधन, अजोला घास तकनीकी आदि विभिन्न विषयों में प्रशिक्षण प्राप्त करते रहते है। इन्होनें पशु विज्ञान केन्द्र के संपर्क में आकर गोबर से वर्मी कम्पोस्ट (कैंचूए खाद्) तकनीक सिखकर स्वंय वर्मीकम्पोस्ट तैयार करते है और अपने खेत में उपयोग करके अन्य खाद् की निर्भरता को कम किया। इसके अलावा इन्होनें पशुओं के लिए नेपियर घास एवं अजोला घास भी लगा रखी है और अपने पशुओं को अजोला व नेपियर घास भी खिलाते है। पदम सिंह देवड़ा एक सफल डेयरी व्यवसायी के साथ–साथ अपने आसपास के क्षेत्र में भी लोगों से अपनी अलग पहचान बना ली हैं। वर्तमान में पदम सिंह पशुपालन से लगभग 40,000 रू. प्रति माह आय प्राप्त कर रहें है। वह अपनी सफलता का श्रेय स्वंय की कड़ी मेहनत और पशु विज्ञान केन्द्र, सिरोही के वैज्ञानिकों को देते है।

सम्पर्क: पदम सिंह देवड़ा
गांव अंगोर, तहसील व जिला सिरोही (मो. : 9982593600)

गर्मी के मौसम मे पशुओं को हीट स्ट्रोक (तापघात) से बचाएं

पशुओं के शरीर का तापमान सामान्य बनाए रखना वातावरण के तापमान, हवा की नमी तथा हवा की गति पर निर्भर करता है। गर्मी के मौसम में यदि पशु अपने शरीर का तापमान नियंत्रित नही रख पाता तो इस स्थिति को तापघात (हीट स्ट्रोक) कहा जाता है। ऐसी अवस्था में पशु का शरीर का तापमान बढ़ जाता है और वह बीमार हो जाता है। अधिक दूध देने वाले पशु इस समस्या से अधिक प्रभावित होते हैं, क्योंकि उनमें उष्मा का उत्पादन भी अधिक होता है।

तापघात के कारण: हीट स्ट्रोक मुख्य रूप से अत्यधिक गर्मी और प्रतिकूल पर्यावरणीय परिस्थितियों के कारण होता है। जब पशु लम्बे समय तक तेज धूप या अधिक तापमान के संपर्क में रहता है, तो शरीर की तापमान नियंत्रित करने की क्षमता प्रभावित हो जाती है और शरीर का तापमान असामान्य रूप से बढ़ने लगता है। इसके अतिरिक्त शरीर में पानी की कमी भी हीट स्ट्रोक का एक प्रमुख कारण है। पर्याप्त मात्रा में पानी न मिलने पर पशु का शरीर खुद को ठंडा नहीं रख पाता जिससे तापमान तेजी से बढ़ जाता है।

तापघात के लक्षण: हीट स्ट्रोक के दौरान पशुओं में कई स्पष्ट लक्षण दिखाई देते है, जिनकी पहचान समय रहते करना बहुत जरूरी है। यदि समय पर उपचार न किया जाए तो अंत में पशु अत्यधिक कमजोर हो जाता है और उसकी स्थिति गंभीर हो जाती है:

- ❖ सबसे पहले पशु सुस्त और कमजोर दिखाई देने लगता है तथा उसकी सामान्य गतिविधियां कम हो जाती है।
- ❖ पशु के शरीर का तापमान बहुत अधिक बढ़ जाता है तो लगभग 106^{o} F से 110^{o} F तक पहुंच सकता है जो एक गंभीर स्थिति को दर्शाता है। इसके साथ ही पशु में पसीना आना कम हो जाता है या पूरी तरह बंद हो सकता है जिससे शरीर की गर्मी बाहर नहीं निकल पाती।
- ❖ ऐसी अवस्था में पशु खाना–पीना छोड़ देता है और उसकी भूख समाप्त हो जाती है। हद्य की धड़कन तेज हो जाती है तथा श्वसन दर भी बढ़ जाती है। पशु अक्सर मुंह खोलकर, जीभ बाहर निकालकर तेजी से सांस लेने लगता है जो शरीर को ठंडा करने का प्रयास होता है।
- ❖ इसके अलावा आखों की श्लेष्मा झिल्ली लाल हो जाती है जो शरीर में बढ़ते तापमान और तनाव का संकेत है। दुधारू पशुओं में दूध उत्पादन में कमी आ जाती है जिससे आर्थिक नुकसान भी हो सकता है।

पशुओं में हीट स्ट्रोक का प्राथमिक उपचार: हीट स्ट्रोक की स्थिति में सबसे महत्वपूर्ण उदेश्य पशु के शरीर का तापमान शीघ्रता से नियंत्रित करना और उसे सामान्य अवस्था में लाना होता है।

- ❖ सबसे पहले पशु को तुंरत छायादार, हवादार और ठंडी जगह पर ले जाना चाहिए, ताकि उसे सीधे सूर्य की गर्मी से राहत मिल सके। यदि संभव हो तो पंखा, कूलर या प्राकृतिक हवा की व्यवस्था करे जिससे शरीर की गर्मी तेजी से बाहर निकल सके।
- ❖ पशु के शरीर का तापमान कम करने के लिए उसे ठंडे (बहुत अधिक ठंडा नहीं) पानी से नहलाना चाहिए या उसके शरीर पर बार–बार ठंडे पानी का छिड़काव करना चाहिए।
- ❖ सिर, गर्दन और माथे पर बर्फ या ठंडे पानी में भीगी सूती पट्टी रखने से तापमान जल्दी कम करने में मदद मिलती है। यदि सुविधा हो तो पशु को पानी से भरे गड्ढ़े, टंकी या तालाब में कुछ समय के लिए खड़ा किया जा सकता है जिससे उसके शरीर की गर्मी तेजी से कम हो सके।
- ❖ हीट स्ट्रोक के दौरान शरीर में पानी और लवणों की कमी हो जाती है इसलिए पशु को बार–बार ठंडा और साफ पानी पिलाना बहुत आवश्यक है। इसके साथ ही ठंडे पानी में चीनी, भुने हुए जौं का आटा और थोड़ा नमक मिलाकर घोल बनाकर देने से ऊर्जा और इलेक्ट्रोलाईट्स की पूर्ति होती है जिससे पशु के जल्दी स्वस्थ होने में मदद मिलती है। इसके अलावा शरीर के तापमान कम करने वाली दवाओं और इलेक्ट्रोलाइट थैरेपी का प्रयोग पशुचिकित्सक की सलाह से करना चाहिए ताकि शरीर में तरल और लवण का संतुलन बना रहे। ध्यान रहे कि हीट स्ट्रोक एक गंभीर स्थिति हो सकती है इसलिए प्राथमिक उपचार के बाद तुंरत नजदीकी पशुचिकित्सालय से संपर्क करना चाहिए और पशुचिकित्सक द्वारा पूरा उपचार करवाना आवश्यक है।

हीट स्ट्रोक से बचाने के लिए उचित देखभाल और प्रबंधन:

- ❖ पशुओं को दिन में 3–4 बार स्वच्छ और ठंडा पानी पिलाना चाहिए ताकि उनके शरीर में पानी की कमी न हो और वे हाईड्रेटेड रहें। पानी की पर्याप्त उपलब्धता पशुओं के शरीर का तापमान संतुलित बनाए रखने में मदद करती है।
- ❖ पशुओं का बाड़ा (शेड) खुला, साफ और अच्छी तरह हवादार होना चाहिए जिससे ताजी हवा का लगातार आवागमन बना रहे इससे पशुओं को घुटन और अत्यधिक गर्मी से राहत मिलती है। साथ ही बाड़े के आसपास छायादार पेड़ लगाना भी लाभदायक होता है क्योंकि इससे वातावरण ठंडा रहता है और सीधे सूर्य की किरणों से बचाव होता है।
- ❖ अत्यधिक गर्मी के दौरान पशुशाला में पंखे, कूलर या फॉगिग जैसी सुविधाओं की व्यवस्था करनी चाहिए ताकि तापमान कम रखा जा सके। विशेष रूप से भैंसों को सुबह और शाम ठंडे पानी से नहलाना बहुत फायदेंमद होता है क्योंकि इससे उनके शरीर की गर्मी कम होती है और वे आराम महसूस करती है।

इन सभी उपायों को अपनाकर पशुओं को गर्मी के दुष्प्रभावों से बचाया जा सकता है और उनकी उत्पादन क्षमता भी बनी रहती है।

डॉ. दीपिका धूड़िया
वरिष्ठ सहायक आचार्य, वेटरनरी कॉलेज, बीकानेर

बदलते मौसम में भैंसों पर बीमारियों का खतरा और बचाव के प्रभावी उपाय

भारत एक कृषि प्रधान देश है, जहां भैंस पालन किसानों की आय का एक महत्वपूर्ण स्त्रोत है और देश के कुल दूध उत्पादन में भैंसों का योगदान अत्यंत महत्वपूर्ण है। ग्रामीण अर्थव्यवस्था में भैंस पालन की भूमिका बहुत बड़ी है, लेकिन बदलते मौसम जैसे सर्दी से गर्मी के दौरान भैंसों में बीमारियों का खतरा काफी बढ़ जाता है। तापमान, आर्द्रता और वातावरण में अचानक परिवर्तन भैंसों की रोग प्रतिरोधक क्षमता को कमजोर कर देता है, जिससे वे विभिन्न संक्रामक, बैक्टीरियल, बायरल और परजीवी रोगों के प्रति अधिक संवेदनशील हो जाती है। ऐसे समय में यदि उचित देखभाल और टीकाकरण नहीं किया जाए तो दूध उत्पादन में कमी, कमजोरी, प्रजनन समस्याएं और कई बार पशु की मृत्यु तक हो सकती है, जिससे पशुपालकों को आर्थिक नुकसान उठाना पड़ता है। बदलते मौसमके दौरान भैंसों में कई प्रमुख बीमारियां देखने को मिलती है, जिनमें मुंह–खुर रोग, गलघोंटू, ब्लैक कार्टर, लंपी स्किन रोग, मास्टाइटिस निमोनिया तथा आंतरिक और बाहरी परजीवी संक्रमण प्रमुख है। मुंह–खुर रोग एक संक्रामक वायरल बीमारी है, जिसमें भैंस के मुंह, जीभ और खुरों में छाले हो जाते है जिससे पशु चलने और खाने में असमर्थ हो जाता है और दूध उत्पादन तेजी से घट जाता है। इस बीमारी से बचाव के लिए कम से कम प्रति वर्ष एफएमडी वैक्सीन 4 महीने से अधिक उम्र की भैंसों को लगाना चाहिए। गलघोंटू भैंसों में मुख्यतः पाई जाने वाली गंभीर बैक्टीरियल बीमारी है, जिसमें तेज बुखार, गले में सूजन (कभी–कभी नर्वस लक्षण) और सांस लेने में कठिनाई होती है। इससे बचाव के लिए मई–जून में वर्ष में एक बार एच.एस वैक्सीन त्वचा के नीचे लगाई जाती है। ब्लैक कार्टर भी एक खतरनाक बीमारी है जिसमें पांसपेशियों में सूजन और बुखार होता है और कई बार पशु की अचानक मृत्यु हो जाती है इसलिए 6 महीने से अधिक उम्र की भैंसों को बी.क्यू वैक्सीन साल में एक बार देना आवश्यक है। संयुक्त FMD-HS-BQ वैक्सीन भैंसों में तीनों प्रमुख संक्रामक रोगों की रोकथाम के लिए प्रभावी मानी जाती है। लंपी स्किन रोग भी हाल के वर्षो में भैंसों और गायों में तेजी से फैला है, जिसमें शरीर पर गांठे, बुखार और दूध उत्पादन में कमी हो जाती है, इसलिए सरकारी निर्देशानुसार वर्ष में एक बार लगभग 1 मिलीलीटर वैक्सीन लगवाना जरूरी होता है। मौसम परिवर्तन के समय दूध देने वाली भैंसों में मास्टाइटिस की समस्या भी अधिक देखने को मिलती है जो मुख्य रूप से गंदगी, संक्रमित पानी और अस्वच्छ दुहाई के कारण होती है। इस बीमारी के बचाव के लिए दुहाई से पहले और बाद में थनों की सफाई, साफ बिछावन, स्वच्छ पानी और दूध निकालने की सही तकनीक अपनाना आवश्यक है।

इसके अलावा बदलते मौसम में भैंसों में कृमि और टिक का प्रकोप भी बढ़ जाता है, जिससे पशु कमजोर हो जाता है और दूध उत्पादन कम हो जाता है इसलिए हर 3–4 महीने में कृमिनाशक दवा जैसे एल्बेंडाजोल या फेनबेंडाजोल पशुचिकित्सक की सलाह से देनी चाहिए तथा टिक और मक्खी निंयत्रण के लिए नियमित स्प्रे या डिप का उपयोग करना चाहिए। भैंसों को स्वस्थ रखने के लिए बदलते मौसम में विशेष देखभाल जरूरी होती है। पशु शेड को हमेशा साफ, सूखा और हवादार रखना चाहिए ताकि बैक्टीरिया और बायरस पनप न सके। भैंसों को हमेशा साफ और ताजा पानी उपलब्ध करवाना चाहिए तथा संतुलित आहार देना चाहिए जिसमें हरा चारा, सूखा चारा, मिनरल मिक्सचर और नमक शामिल हो इससे पशुओं की रोग प्रतिरोधक क्षमता मजबूत होती है और वे बीमारियों से बच पाते हैं। बीमार पशु को तुंरत अलग रखना चाहिए और नजदीकी पशुचिकित्सक से संपर्क करना चाहिए ताकि बीमारी अन्य पशुओं में न फैलें। गर्मी और सर्दी से भैंसों को बचाना भी बहुत जरूरी है। गर्मी के मौसम में छाया, ठंडा पानी, कूलर या फॉगिग की व्यवस्था करनी चाहिए तथा दिन में कई बार पानी पिलाना चाहिए, जबकि सर्दी के मौसम में सूखी बिछावन, हवा से बचाव और धूप में बैठाने की व्यवस्था करनी चाहिए। पशु शेड में उचित वेंटिलेशन और स्वच्छता बनाए रखना भैंसों के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत आवश्यक है। अंततः बदलते मौसम में भैंसों में समय पर टीकाकरण, संतुलित आहार, स्वच्छता, कृमिनाशक और वैज्ञानिक प्रबंधन अपनाकर पशुपालक नियमित रूप से पशुचिकित्सकों की सलाह लें और मौसम के अनुसार भैंसों की देखभाल करें तो डेयरी उत्पादन बढ़ेगा और पशुपालन अधिक लाभकारी और सुरक्षित बन सकता है। पशुओं की सही देखभाल ही किसानों की आय और ग्रामीण अर्थव्यवस्था को मजबूत करने का सबसे प्रभावी तरीका है।

डॉ. सविता, डॉ. सरिता यादव, डॉ. अशोक बूरा एवं डॉ. एफ.सी. टुटेजा
केन्द्रीय भैंस अनुसंधान संस्थान, हिसार (हरियाणा)

निदेशक की कलम से...

डिजिटल पशुपालन: आत्मनिर्भर ग्रामीण अर्थव्यवस्था की ओर एक सशक्त कदम

पशुपालन भारतीय ग्रामीण अर्थव्यवस्था का एक सुदृढ़ एवं अभिन्न अंग है जो न केवल किसानों की आय वृद्धि में सहायक है, बल्कि पोषण सुरक्षा, रोजगार सृजन एवं सतत विकास में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। वर्तमान समय में जब विश्व तीव्र गति से डिजिटल क्रांति की ओर अग्रसर है, तब पशुपालन क्षेत्र में भी आधुनिक तकनीकों का समावेश अत्यंत आवश्यक हो गया है। राजस्थान पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान विश्वविद्यालय, बीकानेर तथा इसके अधीन संचालित पशु विज्ञान केंद्रों के माध्यम से पशुपालन के क्षेत्र में अनुसंधान, शिक्षा एवं प्रसार गतिविधियों को प्रभावी रूप से संचालित किया जा रहा है। इन केंद्रों के माध्यम से नवीनतम वैज्ञानिक तकनीकों एवं व्यावहारिक ज्ञान को सीधे पशुपालकों तक पहुँचाने का कार्य किया जा रहा है, जिससे वे आधुनिक एवं लाभकारी पशुपालन को अपनाने के लिए प्रेरित हो रहे हैं। डिजिटल पशुपालन पारंपरिक पशुपालन पद्धतियों में नवाचार एवं तकनीकी उन्नयन का एक सशक्त माध्यम है। इसके अंतर्गत स्मार्ट सेंसर, मोबाइल एप्लिकेशन, इंटरनेट ऑफ थिंग्स (IoT), कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI) एवं डेटा आधारित प्रबंधन प्रणालियों का उपयोग कर पशुओं के स्वास्थ्य, पोषण, प्रजनन एवं उत्पादन की सटीक एवं सतत निगरानी की जा रही है। इससे न केवल पशुओं की उत्पादकता में वृद्धि होती है, बल्कि रोग नियंत्रण, समय पर उपचार एवं संसाधनों के कुशल उपयोग को भी सुनिश्चित किया जा सकता है। प्रसार शिक्षा तंत्र के अंतर्गत पशु विज्ञान केंद्रों के सहयोग से प्रशिक्षण कार्यक्रमों, कार्यशालाओं, किसान गोष्ठियों, फील्ड डेमोंस्ट्रेशन एवं डिजिटल माध्यमों के जरिए पशुपालकों को जागरूक एवं प्रशिक्षित किया जा रहा है। विशेष रूप से मोबाइल आधारित सेवाओं एवं ऑनलाइन प्लेटफॉर्म के माध्यम से जानकारी का तीव्र प्रसार सुनिश्चित किया जा रहा है, जिससे दूरस्थ क्षेत्रों के पशुपालक भी लाभान्वित हो सकें। डिजिटल पशुपालन के माध्यम से पशुपालकों को बाजार से सीधे जोड़ने, उत्पादों के बेहतर मूल्य सुनिश्चित करने तथा पारदर्शी लेन–देन प्रणाली को बढ़ावा देने में भी सहायता मिल रही है। यह पहल न केवल आर्थिक दृष्टि से लाभकारी है, बल्कि पशुपालन को एक संगठित एवं व्यावसायिक स्वरूप प्रदान करने में भी सहायक सिद्ध हो रही है। अतः यह अत्यंत आवश्यक है कि सभी पशुपालक आधुनिक तकनीकों को अपनाते हुए डिजिटल पशुपालन की दिशा में अग्रसर हों तथा इसे एक लाभकारी, टिकाऊ एवं वैज्ञानिक व्यवसाय के रूप में विकसित करें।

प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया, निदेशक प्रसार शिक्षा, राजुवास, बीकानेर

"धीणे री बात्यां"
पशुपालकों के लिए रेडियो कार्यक्रम
माह के तीसरे गुरुवार को
सायं 5.30 से 6.00 बजे तक
प्रदेश के 17 आकाशवाणी केन्द्रों से प्रसारण

पशुचिकित्सा सम्बन्धी जानकारी प्राप्त करने के लिए
टोल फ्री हैल्पलाईन
1800 180 6224

मुख्य संपादक
प्रो. (डॉ.) राजेश कुमार धूड़िया
संपादक
डॉ. संजय सिंह
डॉ. वैशाली
संकलन सहयोगी
सुरेन्द्र कुमार श्रीमाली
प्रसार शिक्षा निदेशालय
0151-2200505
email : deerajuvas@gmail.com

पत्रिका में प्रकाशित आलेख/विचार लेखकों के अपने हैं।

बुक पोस्ट

भारत सरकार की सेवार्थ

सेवा में

....

....

....

स्वत्वाधिकारी डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, राजुवास, बीकानेर के लिए प्रकाशक, मुद्रक प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया द्वारा डायमंड प्रिन्टर्स एण्ड स्टेशनरी, नत्थूसर गेट, बीकानेर, राजस्थान से मुद्रित एवं डायरेक्टर एक्सटेंशन एजूकेशन, बिजेय भवन पैलेस, राजुवास, बीकानेर से प्रकाशित। सम्पादक : प्रो. (डॉ.) आर.के. धूड़िया